21 वीं सदी के हिन्दी उपन्यासों में ग्रामीण क्षेत्रों से पलायन एवं विस्थापन की समस्या के सामाजिक सांस्कृतिक प्रभाव का अध्ययन

दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट [डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी]

दयालबाग आगरा की हिन्दी विषय में पीएच० डी० उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध विषय की

रूपरेखा

शोधार्थी

अंजली यादव

शोध निर्देशक

डॉ॰ बृजराज कुमार सिंह

हिन्दी विभाग

कला संकाय

हिंदी विभाग, कला संकाय

दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट, (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी)

दयालबाग़, आगरा 282005

2022

शोध विषय का परिचय :-

21वीं सदी में अनेक प्रकार के परिवर्तन हो रहें हैं, जिसमें तकनीकी के साथ- साथ समाज ,व्यक्ति और साहित्य में भी परिवर्तन देखने को मिल रहा है। यह भूमंडलीकरण का समय है, जिसमें सम्पूर्ण विश्व सिमट कर एक हो गया है।प्रौद्योगिकी और तकनीक की अभूतपूर्व प्रगति सूचना क्रांति के क्षेत्र में हुये परिवर्तन ने सामाजिक आर्थिक राजनीतिक और सांस्कृतिक परिवेश को प्रभावित किया है, जिसके कारण समाज और संस्कृति में बहुत से बदलाव आए हैं। जिसने मानवीय मूल्यों से अलगाव की स्थिति उत्पन्न कर दी । पुराने मूल्य खंडित हो रहें हैं, और नए विचार अपनी जगह बना रहें हैं। नए युग और नए समाज को साकार करने के नाम पर पूंजीवाद की जटिल व्यवस्था ने सांस्कृतिक साम्राज्यवाद की स्थिति उत्पन्न की, जिसने सांस्कृतिक विस्थापन को बढ़ावा दिया। वैसे विस्थापन का अर्थ अपने मूल स्थान से अन्यत्र जाकर निवास करना ,लेकिन विभिन्न शब्द कोश ने विस्थापन को अपने स्तर से परिभाषित करने का प्रयास किया है। हिन्दी साहित्य का मानक शब्द कोश के अनुसार बल पूर्वक किसी स्थान से हटाना ही विस्थापन है। हिन्दी साहित्य और अँग्रेजी भाषा पर समान अधिकार रखने वाले हिन्दी साहित्य के महान पुरोधा कामिल बुल्कै के अनुसार – विस्थापन "मूल स्थान से अन्यत्र चले जाना' पाश्चात्य अँग्रेजी शब्द कोश 'द कनसाइज़ ऑक्सफोर्ड डिक्सनरी' के अनुसार विस्थापन 'विस्थापित होने की घटना या प्रक्रिया'। विस्थापन एक व्यक्ति की समूल संवेदना, जगह ,और अपने मूल से पूरी तरह अलग होने की प्रक्रिया है। एक व्यक्ति रोजगार के लिए अपनी जमीन,अपना गाँव छोड़कर शहर की तरफ भागता है, उसे हम पलायन कहेंगे जो जीवन की अवश्यकताओं और आर्थिक तंगी के कारण उत्पन्न होता है । पलायन कहें या विस्थापन दोनों में व्यक्ति अपनी जमीन छोड़कर जाता है, और यह प्रक्रिया कभी भी सहर्ष नहीं होती है । पलायन कहें या विस्थापन ये प्रक्रिया बड़े और व्यापक स्तर पर होता रहा है, जो आज भी जारी है। जो एक बार गाँव से निकाला गया, वह दुबारा अपने गाँव लौटने की लालसा रखते हुये भी नहीं लौट पता। गाँव वापसी की पीड़ा व्यक्ति को ताउम्र सालती रहती है। इसी मानसिक विघटन, उत्पीड़न और अपनी जमीन से अलग होने का दंश 21वीं सदी की रचनाओं में देखने को मिलता है। हिन्दी उपन्यासों में इसका

चित्रण बहुत ही व्यापक स्तर पर हुआ है। जिसमें काशीनाथ सिंह, अलका सरावगी, रणेन्द्र, अखिलेश स्वयं प्रकाश, नासिरा शर्मा, रमणिका गुप्ता, महेंद्र भीष्म, रामशरण जोशी, रामाकान्त, योगेश गुप्ता आदि अनेक रचनाकारों ने अपनी लेखनी के माध्यम से 21वीं सदी के उपन्यासों में पलायन और विस्थापन की समस्या को अपनी लेखनी का आधार बनाया है ।

गाँव की संरचना ,मूल्य ,परम्पराएँ ,पारस्परिक संबंध सब कुछ में बदलाव देखनें को मिलता है । आज ग्रामीण समाज की संस्कृति ऐसे संक्रामण के दौर से गुजर रही है,जिसमें बहुत कुछ नष्ट हो रहा है। गाँव में सामूहिकता की भावना ,ग्रामीण समाज के लोक गीत, परम्पराएँ ,रीति-रिवाज सभी कुछ संक्रमित हो रही है। आज गाँव के गीतों में वह मिठास नहीं, रिश्तों के बीच सामंजस्य नहीं है। ऐसे में ग्रामीण समाज जो भारत का आधार था, पूरी तरह से टूट रहा है ग्रामीण समाज को तोड़ने ,बदलने में विकास की यह संस्कृति अपनी तरह से काम कर रही है। आज गाँव के किसान शहरों की तरफ पलायन कर रहें हैं, स्पेशल इकनॉमिक जॉन [सेज] के नाम पर पैदावार वाली जमीन को बहुराष्ट्रीय कंपनियों को बहुत सस्ते दामों पर दिया जा रहा है । खेती में पैदावार बढ़ाने के नाम पर किसानों को हर बार बहुत उच्च स्तर पर बीज खरीदने पड़ रहें हैं, जो जमीन की उर्वरा शक्ति को क्षरित कर रहीं है। यह आयातित बीच अमेरिका आदि विकसित देशों से आ रहें हैं, जिनसे फसलों की पैदावार तो बढ़ रही लेकिन जमीन की उर्वरा शक्ति क्षीण हो रही। इन सभी कारणों से किसान आत्महत्या करने पर मजबूर हो रहें हैं, यह सबकुछ विकास के नाम पर किया जा रहा है।

समाज में परिवर्तन होता है तो साहित्य में परिवर्तन निश्चित है । 21वीं सदी का परिदृश्य बदला , गाँव की संरचना बदली, पलायन और विस्थापन की वजह से जो सांस्कृतिक विद्रूपता आयी, जिस बदलाव का अध्ययन साहित्य ने किया है ।हिन्दी उपन्यासों के माध्यम से भारत और हिन्दी भाषीय में इन समस्याओं को गाँव के संदर्भ में चित्रित किया है ।

21वीं सदी के उपन्यासों में विस्थापन, उपभोक्तावादी संस्कृति, बाजारवाद इन सभी बिन्दुओं को सूक्ष्मता से चित्रित

किया है । किसी भी प्रकार का पलायन या विस्थापन व्यक्ति को अपनी जड़ों से अलग ही करता है। ऐसे कई उपन्यास है, जिनमें यह समस्या दिखाई गई है। उनमें से एक है रणेन्द्र का उपन्यास 'गायब होता देश, जिसमें सांस्कृतिक साम्राज्यवाद द्वारा विस्थापन की संस्कृति का चित्रण है। विस्थापन और पलायन से उत्पन्न संस्कृति ने सबको जकड़ रखा है। बाजार ने बहुत से चेहरे बना रखें है, जिनमें कोई भी असली चेहरा नहीं है, फिर भी व्यक्ति उसी में फसता चला जा रहा है। यह उपन्यास आदिवासियों के जीवन में हो रही कठिनाइयों का चित्रण है। 21वीं सदी में व्यक्ति और इन सभी बाहरी मुखौटों में फसता चला जा रहा है और सबसे बड़ी बात यह है कि व्यक्ति को पता भी नहीं चल रहा है। विस्थापन और अपनी मिट्टी से दूरी ने व्यक्ति को अंदर से खोखला कर दिया है ,जिसको भरने के लिए व्यक्ति बाजार की तरफ भाग रहा जिससे व्यक्ति में एक असंतोष पैदा हो रहा और वही असंतोष मानसिक विघटन के मूल में है।

अलका सरावगी का उपन्यास एक ब्रेक के बाद में बाजारवाद कैसे हमें अपने मूल जगह से हटाकर कल्पना और विलासिता की दुनिया का सैर करा रहा है, जिसका चित्रण इस उपन्यास मे किया गया है । बस्तर के गाँव में भी व्यक्ति बाजारवाद और विकसित तकनीकी सुविधाओं के सपने देख रहा है , व्यक्ति छोटा हो या बड़ा सब सपने अपने-अपने हिसाब से देख रहें हैं । सपनों की वजह से वह बाजार हमारे जीवन का एक महत्त्वपूर्ण अंग बन गया है, यह हमें अब नियंत्रित कर रहा है, जिसकी जटिलता का अंदाजा व्यक्ति को नहीं हो रहा। इस विलासितावादी संस्कृति ने वास्तविता के धरातल को लगभग खत्म कर दिया है। इन सब बिन्दुओं को लेकर यह उपन्यास लिखा गया है।

विस्थापन का सबसे कठिनतम स्वरूप है निर्वासन ।यहाँ कोई मनुष्य या वस्तु जबरन अपने मूल से अलग की जाती है। विभिन्न प्रकार की प्राकृतिक , सामाजिक अथवा आर्थिक परिस्थितियाँ इसका कारक होती है। अखिलेश **का उपन्यास निर्वासन** विस्थापन की ऐसी तमाम प्रकार की संवेदनाओं को बड़े ही विचारपूर्ण एवं मनोवैज्ञानिक तरीके से पड़ताल करता है , इसी के साथ यह उपन्यास वर्तमान समय की पारिवारिक , सामाजिक ,राजनीतिक व आर्थिक परिवेश की भी विवेचना करता है ।

विस्थापन से उपजे रूपांतरण की इस प्रक्रिया में सांस्कृतिक परिवेश का विस्थापन होता जा रहा है। इसके माध्यम से मनुष्य में उसके सामाजिक संबंध और भावनात्मक लगाव का विस्थापन होता चला जा रहा है। यह उपभोक्तावाद

का वही उपक्रम है, जिसमें मनुष्य के भावनात्मक संवेदनाओं को समाप्त कर, बाजारवादी मूल्यों को स्थापित किया जा रहा है। पूंजीवादी तंत्र यह जानता है कि जब तक व्यक्ति से इन सभी भावनात्मक लगाव और यादों को समाप्त नहीं किया जायेगा तब तक बाजारवाद की संस्कृति को बढ़ावा नहीं मिलेगा । इसीलिए वह अपने विभिन्न उपक्रमों द्वारा इस विस्थापन की कोशिश को अंजाम दे रहा है। इस आत्मनिर्वासन से उपजा यह असह्य अकेलापन इतना भयानक है कि किसी को अपना हाल कह न सको। इन सभी इस वैश्विक पटल पर छाई उपभोक्तावादी संस्कृति के इस वैश्वीकृत संसार के समक्ष स्वयं को निहायत कमज़ोर असहाय महसूस करता है। **काशीनाथ का उपन्यास रेहन पर रग्घू** नये युग की वास्तविकता की बहुस्तरीय गाथा है, इसमें उपभोगक्तावाद की क्रूरताओं का विखंडन है, और भूमंडलीकरण के परिणामस्वरूप संवेदना, संबंध और सामूहिकता की दुनिया में जो निर्मम ध्वंस हुआ है, तब्दीलियों का जो तूफान निर्मित हुआ है ,उसका प्रामाणिक और गहन अंकन है। 'रेहन पर रग्घू यह उपन्यास वस्तुत:गाँव, शहर अमेरिका तक के भूगोल में फैला हुआ अकेले और निहत्थे पड़ते जा रहें समकालीन मनुष्य का बेजोड़ आख्यान है। इसी तरह एक अनेक महत्वपूर्ण उपन्यास है लिखे गए जिनमें पलायन और विस्थापन से उत्पन्न बदलाओं का अंकन है।

प्रस्तुत शोध विषय का उद्देश्य एवं महत्व :- प्रस्तावित शोध विषय 21वीं सदी के उपन्यासों में ग्रामीण क्षेत्रों से पलायन एवं विस्थापन की समस्या के सामाजिक सांस्कृतिक प्रभाव का अध्ययन के अंतर्गत उपभोक्तवाद की संस्कृति के विकास के कारण ग्रामीण क्षेत्रों के बदलते सामाजिक सांस्कृतिक प्रभाव का अध्ययन करना है। बाजारवाद और उत्तर-आधुनिकीकरण के कारण ग्रामीण क्षेत्रों से पलायन एवं विस्थापन की समस्या का अध्ययन करना तथा पूंजीवाद की जटिल व्यवस्था के कारण बढ़ती सांस्कृतिक साम्राज्यवाद की स्थिति का अध्ययन करना इस शोध का उद्देश्य रहेगा, साथ ही उपभोक्तावाद की संस्कृति के बढ़ने के कारण मानवीय मूल्यों से अलगाव की स्थिति और बेरोजगारी के कारण ग्रामीण क्षेत्रों से विस्थापन एवं पलायन की समस्या का अध्ययन करना इस शोध विषय का उद्देश्य रहेगा ।

शोध विषय पर हुए पूर्ववर्ती शोध कार्य एवं शोध की मौलिकता :-

साहित्य सर्वेक्षण के दौरान मैंने विभिन्न संस्थानों एवं विभिन्न इंटरनेट साइट एवं शोध गंगा में प्रस्तुत विषय की खोज हेतु आंकड़ों का संकलन किया। इस दौरान शोधार्थी के शोध विषय के संदर्भ में कोई भी शोध कार्य प्राप्त नहीं हुआ है। पलायन और विस्थापन से संबन्धित शोध कार्य हुये हैं , लेकिन उनका प्रभाव किस तरह सामाजिक और सांस्कृतिक

रूप पर पड़ता है इसका अध्ययन करना ही मेरे शोध का उद्देश्य होगा ।शोधार्थी का शोध विषय 21वीं सदी के उपन्यासों में ग्रामीण क्षेत्रों से पलायन एवं विस्थापन की समस्या के सामाजिक सांस्कृतिक प्रभाव का अध्ययन एक मौलिक शोध है जिसमें 21वीं सदी के उपन्यासों मे ग्रामीण क्षेत्रों से पलायन एवं विस्थापन की समस्या के सामाजिक सांस्कृतिक प्रभाव का अध्ययन किया जाएगा ।

शोध-सर्वेक्षण – शोध विषय से संबन्धित जानकारी विभिन्न विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयों से ली गई है ।

1- डी.ई.आई दयालबाग,विश्वविद्यालया, आगरा

2- केंद्रीय हिन्दी संस्थान,आगरा

3- दिल्ली विश्वविद्यालया दिल्ली

4- आगरा विश्वविद्यालया, आगरा

शोधकार्य की प्रविधियाँ :- "21वीं सदी के उपन्यासों में ग्रामीण क्षेत्रों से पलायन एवं विस्थापन की समस्या के सामाजिक सांस्कृतिक प्रभाव का अध्ययन" सामाजिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है। प्रस्तावित शोध कार्य को करते समय शोध की मौलिकता को ध्यान रखते हुये प्रस्तावित शोध कार्य में तुलनात्मक, विश्लेषणात्मक समीक्षात्मक, विचारात्मक एवं समाजशास्त्रीय आदि पद्धतियों का प्रयोग किया जाएगा । संदर्भ ग्रंथ,आधार ग्रंथ, शब्द कोश और विश्व कोश के प्रयोग द्वारा शोध कार्य की तथ्य परक सामग्री एकत्रित किया जाएगा।

रूपरेखा

भूमिका

प्रथम अध्याय- पलायन एवं विस्थापन : 21वीं सदी का भारतीय गाँव

क- पलायन का अर्थ एवं परिभाषा

ख- विस्थापन का अर्थ व स्वरूप भारतीय परिपेक्ष्य में

ग- पलायन एवं विस्थापन अर्थ साम्य एवं वैषम्य के सामाजिक सांस्कृतिक कारण

द्वितीय अध्याय- 21वीं सदी के हिन्दी उपन्यास : सामाजिक सांस्कृतिक परिवर्तन के दस्तावेज़

क- उदारीकरण का प्रभाव

ख- मण्डल आयोग

ग- सांप्रदायिक चुनौतियाँ

घ- परिवार एवं संबंध

ङ- राजनैतिक चेतना

तृतीय अध्याय- 21वीं सदी के उपन्यासों में ग्रामीण जीवन ,पलायन एवं विस्थापन के कारणों की खोज

क- आर्थिक और सामाजिक कारण

ख- कृषि में बदलाव

ग- भूमंडलीकरण की भूमिका

घ- बजारवाद का दबाव

चतुर्थ अध्याय- 21वीं सदी के उपन्यास : पलायन एवं विस्थापन से उपजी सांस्कृतिक विसंगति की अभिव्यक्ति

क- सांस्कृतिक शून्यता की अभिव्यक्ति

ख- स्मृति में गाँव

ग- समुदाय,परिवार , एकांकी जीवन की विसंगतियाँ

घ- शहरी जीवन का स्वप्न और यथार्थ

पंचम अध्याय- भाषा ,शिल्प एवं अभिव्यक्ति में नवीनता

क- भाषा और ग्रामीण समाज

ख- भाषा और अभिव्यक्ति

ग- विस्थापन और अभिव्यक्ति का संकट

घ- शिल्प की नवीनता

ङ- शिल्प एवं अभिव्यक्ति में प्रयोग

उपसंहार

आधार ग्रंथ

1- चंद्रकांता ,कथा सतीसर, राजकमल प्रकाशन 2001

2- राकेश कुमार ,पठार पर कोहरा , भारतीय ज्ञानपीठ 2003

3- संजना कौंल ,पाषाण युग , आधार प्रकाशन हरियाणा 2003

4- रमाकांत , जुलूस वाला आदमी , राधाकृष्ण प्रकाशन 2003

5- स्वयं प्रकाश ,ईधन ,वाणी प्रकाशन ,2004

6- क्षमा कौल ,दर्दपुर, ज्ञानपीठ प्रकाशन 2004

7- रवींद्र वर्मा ; दस बरस का भंवर, दिल्ली राजकमल प्रकाशन (2007)

8- काशीनाथ सिंह , रेहन पर रग्घू, दिल्ली राजकमल प्रकाशन (2008)

9- रामशरण जोशी , आदमी बैल और सपने, सामयिक प्रकाशन 2008

10- अलका सरावगी ; एक ब्रेक के बाद, दिल्ली राजकमल प्रकाशन (2008)

11- अनवर सुहैल ,पहचान ,राजकमल प्रकाशन 2009

12- राजू शर्मा ,विसर्जन, आर॰ ए ॰ जे प्रकाशन 2009

13- रणेंद्र ; ग्लोबल गाँव का देवता, दिल्ली भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन (2010)

14- कमल कुमार ,पासवर्ड ,सामयिक प्रकाशन 2013

15- रणेंद्र, गायब होता देश , पेंगइन बुक्स , 2014

16- अश्विनी कुमार पंकज ,माटी माटी अरकाटी ,राधाकृष्ण प्रकाशन 2016

सन्दर्भ ग्रंथ -

1- गोपाल राय ,उपन्यास की संरचना राजकमल प्रकाशन (2006)

2- रामचंद्र तिवारी ,हिन्दी उपन्यास ,विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी (2010)

3- नामवर सिंह ,आधुनिक हिन्दी उपन्यास ,राजकमल प्रकाशन (2010)

4- मधुरेश , हिन्दी उपन्यास का विकास ,लोक भारती प्रकाशन (2014)

5- पुष्पाल , 21**वीं** सदी का हिन्दी उपन्यास ,राजकमल प्रकाशन (2016)

6- गंगा सहाय मीणा ,आदिवासी और हिन्दी उपन्यास ,(2018)

7- संस्कृति के चार अध्याय, रामधारी सिंह दिनकर, साहित्य अकादमी प्रकाशन नई दिल्ली 1956

8- भारतीय संस्कृति की रूपरेखा ,बाबुगुलाब राय , प्रभात प्रकाशन 2010

9- भारतीय संस्कृति के आधार , विद्यानिवास मिश्र, प्रभात प्रकाशन 2010

10- संस्कृति और साहित्य ,डॉ अमरेन्द्र ,अंगिका फ़ाउंडेशन 2008

11- उपन्यास स्वरूप और संवेदना ,राजेंद्र यादव , वाणी प्रकाशन 1997

12- आदिवासी विकास से विस्थापन, रमणिका गुप्ता ,राधा कृष्ण प्रकाशन

13- आदिवासी साहित्य और समाज , रमणिका गुप्ता, सामयिक प्रकाशन संस्कारण 2016

14- विस्थापन का साहित्यिक विमर्श , अचला पाण्डेय ,लोकभारतीय प्रकाशन 2019

पत्र -पत्रिकाएँ -

- कथा साहित्य
- तद्भव
- कथा देश
- हंस
- आदिवासी

- वङ्मय
- दलित अस्मिता

शब्द कोश

- हिन्दी शब्द सागर ,नागरीय प्रचारणी सभा वाराणसी
- हिन्दी साहित्य कोश- पारिभाषिक शब्दावली , धीरेंद्र वर्मा
- हिन्दी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली – डॉ अमरनाथ